

K-109 107
Revised
109 108

KS-104

सच्चा जन्मदिवस मनाना क्या है ?

(सत्संदेश मार्च 1968 में प्रकाशित प्रवचन)

प्यारे भाईयों और बहनो ! आप सब भाई यहां इकट्ठे हुए हैं जन्मदिन मनाने के लिये । हम तो यह समझते हैं, जब हम जिस्म में आते हैं, यह हमारा जन्म है । सच पूछते हो, जो नीचे से (नीची योनियों से) चक्कर काटता है, उसके लिये तो समझ लो यह मुबारिक जन्म है । अगर कोई Higher circle (ऊँचे स्थान) से आ जाए तो उसके लिये यह कैद है कैद, जन्म नहीं । अच्छी कैद है, 84 लाख जियाजून की सरदार जून है । इसमें आदमी प्रभु को पा सकता है । क्राईस्ट थे । लोग बैठे थे बहुत सारे । तो कहने लगे -

Except ye be born anew ye cannot enter the Kingdom of God.

जब तक तुम दोबारा जन्म नहीं लेते, तुम प्रभु की बादशाहत में दाखिल नहीं हो सकते । तो वहां एक Nikodemus (निकोडैमस) था । बड़ा आलम-फाजल (विद्वान), वकील भी था । उसने आ कर कहा, - Lord, how can we enter the womb of the mother and be reborn. कि मैं इतना बड़ा हूँ, कैसे मैं माता के पेट में वापस जा कर फिर जन्म ले सकता हूँ ? तो क्राईस्ट ने कहा, देख तू इतना पढ़ा-लिखा आलम-फाजल है, सारा जहान तेरी कद्र करता है । क्या तू यह नहीं जानता कि-Spirit is born of the spirit and flesh of the flesh. आत्मा का जन्म इस बाहरी कैद से आज्ञाद होकर प्रभु के घर में जाना है । तो ज़ोरदार लफ़ज़ों में कहा (क्राईस्ट ने)-You must be reborn. समझे । तो भई जिसको तुम जिस्म (देह) कहते हो, सच्ची बात तो यह है कि जिस्म में आ कर कैद में आना है । मगर वह मालिक भेजने वाला जाने । तो जिस्मानी लिहाज़ से आप यह कह सकते हो कि 6 फरवरी है (मेरा जन्मदिन) । मुझे मालूम नहीं । क्योंकि मेरे माता-पिता ने मुझे कहा है इसलिये शायद है (संगत को संबोधन करके) क्यों भई आपको मालूम है अपना जन्मदिन ? मेरे ख्याल में किसी को भी नहीं मालूम । सुना है ना !

तो भई इंसान हर रोज जन्म लेता है । रात जब नींद में सोते हो ना, यह छोटी बहन है (मौत की) । कुरान शरीफ़ कहता है, नींद छोटी बहन है मौत की । तुम रोज़

रात को मरते हो और सुबह पैदा होते हो। तो हर रोज हम जन्म लेते हैं, जब से हम जिस्म की कैद में आए और हर रोज हम जिस्म छोड़ते हैं। फर्क सिर्फ इतना है कि प्रारब्ध कर्मों के अनुसार जितने सांस लेने हैं उतने ले कर ही यह जिस्म को हमेशा के लिये छोड़ सकता है, नहीं तो Silver cord (दिव्य सूत्र जीवन का) टूटता नहीं जो कर्मों के अनुसार है। इसलिये वापस आना पड़ता है। हम रोज मरते हैं रोज पैदा होते हैं। सो असल जन्म किस बात में है? जब हम गुरु के घर में जन्म लें, जन्म-मरण से आज्ञाद हो जाए। गुरु नानक से पूछा गया कि तेरा जन्म-मरण कब से खत्म हुआ? कहते हैं, गुरु के घर जब पैदा हुए उस दिन से आवागमन मिट गया। बाजे लोग तो आते रहते हैं और जाते रहते हैं। तो असल जन्म, मेरा तो भाई 1917 ई. में हुआ था जब मैं जिस्म छोड़ कर हजूर के साथ आसमानों का सफर करता था। (नोट: नाम आपने हजूर से 1924 ई. में लिया था लेकिन अंतर नूरी स्वरूप का दर्शन सात साल पहले होने लगा था) और बाहरी जिस्मानी तौर पर जब उनके चरणों में गया तो यही फरवरी का महीना था, बंसत पचांमी का दिन था, जब मैं Physically बाहर जिस्मानी तौर पर हजूर के चरणों में पहुंचा हूँ।

तो आप लोग आए हो, आप की बड़ी दया है मगर मैं यह समझता हूँ असल में तुम जो जन्म मना रहे हो, यह जन्म-उत्सव नहीं है। यह तो जिस्म में आ कर काम करना है। करना पड़ता है। असल जन्म वही है जब हम पिंड को छोड़ कर अगले जहान में सफर कर सकते हैं और मर्जी पर वापस आ सकते हैं। तो असल जन्म मनाना किस बात में है? सवाल अब यह आता है। क्या मत्थे टेकने में है, खुशी मनाने में है? चिरागां (दीपमाला) करने में है? खाने-पीने में है? भई नहीं। असल जन्मदिन यही है हम भी गुरु के घर जब जन्म लें। एक तो जन्म यह जिस्म में है ना! एक जिस्म से ऊपर है। हम 9 द्वारों में कैद हो गए। यह कैद है कि जन्म, माफ करना! जन्म तब है जब 9 द्वारों से हम ऊपर जाएं। तो जन्म दिन मनाना किसी महापुरुष का इसी बात में है कि जिस तालीम को उसने पाया है, जो जन्म उसने लिया है, तुम भी लो। जिस गति को उसने पाया है, तुम को वह गति मिले। सच्चा जन्म मनाना तो इसी बात में है और ऐसे महापुरुष हमेशा दुनिया में आते हैं। हमारे दरम्यान आ कर, जितनी समझ उनके अंतर आती है, वह क्या होती है कि इस राज (भेद) को कोई पैदा करने वाला है। जब घड़ी को बनाने वाला कोई है-कोई चौबीस घंटे चलती है, कोई सात दिन चलती है, कोई महीना भर चलती है, तो इस सारी

कायनात (सृष्टि) का, As a matter of inference (बुद्धि विचार के आधार पर) कोई बनाने वाला होना चाहिये ना।

तो वह (महापुरुष) आते हैं। उनका काम क्या है ? वह कहते हैं, भई प्रभु को जानो। प्रभु का प्यार बनाओ, प्रभु से जुँड़ो और फिर, जहां हमारी आत्मा कभी थी, वहां से आए हो, फिर अपने घर वापस चले जाओ। बस। उनका काम सिर्फ इतना ही है। तो सच्चा जन्मदिन का मनाना यही है कि आप, जो तालीम परम्परा से चली आई है, उसे हम भूलते रहते हैं। महापुरुष आ कर जितनी समझ प्रभु उनको बख्शता है, उतनी ही वह (दूसरे लोग) समझ जाएं और वैसी ही गति को पा जाएं जिसको वह (महापुरुष) पा रहे होते हैं और तुमको देना चाहते हैं। तो जब भी महापुरुष आते हैं सबसे पहले यही कहते हैं कि देखो वह परमात्मा है और उसका अनुभव हो सकता है। कब ? जब आप जन्म लें दोबारा। You must be reborn. जब पिंड (जिस्म) से ऊपर आओ तो Conscious Coworker of the Divine plan बन जाता है, तो कहता है, कुछ है। एक मास्टर था। उसके मकान पर लिखा था-God is nowhere परमात्मा कहीं नहीं है। एक बच्चा वहां आया। पढ़ने लगा, G.O.D. God i. s. is n. o. w. now h. e. r. e. here, God is now here, कि परमात्मा अब यहां है। वह मास्टर नास्तिक बन रहा था। कहने लगा, बच्चा तू ठीक कहता है। जब मरते हुए रूह यहां (दो आंखों के पीछे रूह के ठिकाने पर) सिमटे, फिर मालूम होता है, कोई ताकत है। या तो Inference निकाल कर (बुद्धि विचार से) समझो, या मरते वक्त कुछ होश आती है, कोई ताकत कंट्रोल कर रही है। उसके अंदर बेबस हम जा रहे हैं। या जीते जी मर कर देखो। दो ही तरीके हैं। जीते-जी मर कर क्या होता है ? मौत के समय क्या होता है ? सेंट फ्लुटार्क कहता है -

Those who are initiated into the mysteries of the Beyond, their soul has the same experience as it has at the time of death of the human body.

जिनको अंतर का रास्ता, सुरति का पिंड से ऊपर आ कर ऊपर दिव्य मंडलों में प्रवेश करने का अनुभव प्राप्त होता है उनको वैसा तजरबा होता है जैसा रूह को मरते समय शरीर छोड़ते समय होता है। तो प्रभु का अनुभव हो सकता है। मर कर तो इंसान बेबसी में चला जाता है। जो जाता है वह फिर आ कर कहता नहीं क्या

हुआ, तो Inferences निकालकर भी किसी नतीजे पर पहुंच सकते हो, मगर जीते-जी भी तुम उसका अनुभव कर सकते हो। कब ? जब पिंड को छोड़ना सीख जाओ। इसलिये- You must be reborn छोटा-बड़ा, बच्चा बूढ़ा, आलम-फाज़ज़, गरीब-अमीर, सब कोई इस गति को पा सकता है। महापुरुषों के कलामों में आया, उन्होंने प्रभु को देखा भी है। दो तरह के बयान मिलते हैं। एक तो यह है कि प्रभु को किसी ने नहीं देखा-

Nobody has seen God at any time

एक ऐसे बयान मिलते हैं कि हमने देखा है। “नानक का पातशाह दिस्से ज़ाहिरा।” क्राईस्ट से पूछा, उसने कहा, Behold the Lord, देखो परमात्मा खड़ा है। कबीर साहब ने कहा,-

अल्लाह अलख न जाई लखेया गुर गुड़ दीना मीठा ।
कहे कबीर मेरी शंका नाठी सरब निरंजन डीठा ।

इकरार करते हैं। यही गुरु अर्जन साहब ने फरमाया -

जल थल महियल भरपुर लीना घट-घट रमैया डीठा ॥

सब महापुरुष यही कहते हैं। स्वामी विवेकानंद जब गए हैं स्वामी रामकृष्ण परमहंस के पास तो पूछा, हे महात्मा ! तुम ने प्रभु को देखा है ? कहते हैं, हाँ बच्चा, मैं उसको देख रहा हूँ, जैसे मैं तुझ को देख रहा हूँ।” तो देखा जा सकता है। मैंने तीन जगहें बताई। एक तो Inferences निकालकर (बुद्धि विचार से)। देखिये, छोटा दाना है। उसमें वह ताकत काम कर रही है। ज़मीन में दबाओ, पानी दो, बड़ा दरख्त बन जाता है। एक आम बीजों तो हज़ारों आम बन जाते हैं। तो उसमें कोई शक्ति है ना काम कर रही है। वह लाईफ (ज़िंदगी) सब में काम कर रही है। अब उसको कब जान सकते हैं ? एक तो मरते समय। उस वक्त पता लगता है मैं खिंचा जा रहा हूँ। कोई कंट्रोलिंग पावर मुझे ले जा रही है। या जीते-जी मरे, पिंड को छोड़ना सीख जाए, फिर देखेगा Conscious Coworker of the Divine Plan बन जाएगा, कहेगा, हाँ, है। या Inferences निकाल कर देख ले। या एक और बात। ताकत के मुतल्क आपने बहुत कुछ पढ़ा, बड़ी-बड़ी किताबें Energy (ताकत) के बारे में, जब किसी पहलवान को देखो, जिसने अपने अंतर वह ताकत

इकट्ठी की है, उसकी शक्ल देखोगे तो ताकत का एहसास होगा की नहीं ? Radiation होगी (ताकत की धारायें फूटेंगी) उससे । ऐसे ही किसी अनुभवी पुरुष को देखकर भी उसके (प्रभु के) होने का यकीन आने लगता है ।

सुभर भरे प्रेम रस रंग । उपजे चाओ साध के संग ॥

तो मानुष जन्म पा कर हम उसको जिंदगी में ही देख सकते हैं । जो जीते-जी पंडित है, वह मर के भी पंडित ही रहेगा । हमारे हजूर फरमाया करते थे, जो जीते-जी अनपद है, वह मर कर अनपद ही रहेगा । अब सवाल आता है, कौन देख सकता है ? हम कौन हैं ? हम आत्मा-देहधारी हैं । हम आत्मा हैं, चेतनस्वरूप हैं, Conscious entity हैं । आत्मा ने उसका (प्रभु का) अनुभव करना है । न वह इंद्रियों से जाना जाता है, न मन से, न बुद्धि से, न प्राणों से । उसका अनुभव करना है तो केवल आत्मा ने करना है । हम आत्मा हैं ज़रूर । सारे महापुरुष कहते हैं, “कहो कबीर एह राम की अंश ।” यह (आत्मा) प्रभु की अंश है । A drop of the Ocean of All-Consciousness. यही और महापुरुष कहते हैं । तुलसी साहब कहते हैं -

चौथे लोक बसत इक स्वामी ।

इन्सान का जामा (चोला) ब्रह्मंड के नमूने पर बना है । “जो ब्रह्मंडे सो ही पिंडे जो खोजे सो पावे ।” ब्रह्मंड में तीन लोक हैं-स्थूल, सूक्ष्म और कारण, Physical Astral and Causal. यह तो है ब्रह्मंड । और आगे पारब्रह्मंड का भी ज़िक्र आता है । एक ब्रह्म, एक पारब्रह्म । तो चौथा लोक ब्रह्म से परे है । तीनों लोकों में Action-reaction (क्रिया व प्रतिक्रिया) होता रहता है । कभी ऊपर कभी नीचे, कभी नीचे कभी ऊपर । इसके (ब्रह्म के) नमूने पर यह मानुष देह हमें मिली है । हम बड़े भाग्यशाली हैं, हमें ब्रह्मंड के मुताबिक यह शरीर मिले हैं-कसीफ़ (स्थूल) लतीफ़ (सूक्ष्म) और लतीफ़-उललतीफ़ (कारण)-सारे महापुरुषों ने अपनी ज़बान में बयान किया है, बात वही है । जो इन गिलाफ़ों (आवरणों) को उतार कर तीनों के पार पहुंचे वह उसको अनुभव करता है, उसको पूरा यकीन आने लगता है, बल्कि वह देखता है कि, I and my Father are one (मैं और मेरा पिता एक हैं) । उसकी (परम पिता की) हम अंश हैं । हमारी आत्मा प्रभु की अंश है, सतपुरुष की अंश है । मगर एक मुश्किल बन रही है । वह क्या ? हम जिस्म का रूप बन रहे हैं, अपने आपको भूल रहे हैं । “जीव अंस अथ अंतर्यामी ।” उस अंतर्यामी (प्रभु) की हम

अंश हैं। यही और हमारे महापुरुषों ने कहा। तुलसी दास कहते हैं -

ईश्वर अंश जीव अविनाशी ।

अविनाशी का यह जीव अंश है मगर है क्या ? सत, चित और आनंद रूप है। यह अटल है, लाफ़ानी (अमर) है, परमात्मा जैसे अटल और लाफ़ानी है। अजर है। यह चित है, All-wisdom है, कुल (सर्वज्ञ) है। उसकी यह अंश है और आनंदमय है क्योंकि उसकी अंश है। यह तीनों गुण इसमें (आत्मा में) भी हैं मगर हम उस को पा क्यों नहीं सकते ? गुरु नानक साहब से पूछा गया आत्मा के बारे में। तो फरमाते हैं -

आत्म में राम, राम में आत्म ।

हमारी आत्मा में राम बस रहा है और राम में हमारी आत्मा बस रही है, चेतन। उसको हम कब जान सकते हैं ? “चीनस गुरु ऊंचा।” जब कोई गुरु मिले। उसके पास बैठने से इसका हम अनुभव कर सकते हैं, Practical self-analysis करके (आत्मा को पिंड से अलैहदा करके) Rise above body-consciousness करके (देहध्यास से ऊपर आकर) हम उसके देखने वाले बन सकते हैं। तो मनुष्य जन्म पा कर हमने परमात्मा का अनुभव करना था। अनुभवी पुरुष जब आते हैं, वह परमात्मा का प्यार देते हैं, शौक दिलाते हैं। खुद उस रंग में रंगे होते हैं और हम को वह रंग देते हैं। वह देखते हैं (प्रभु को) और हमें देखने की पूँजी दे देते हैं।

संत संग अंतर प्रभ डीठा ॥ संतन मोको पूँजी दीनी ॥

वह Demonstrate (साक्षात्कार) करते हैं, अनुभव देते हैं, By self analysis (आत्मा को पिंड से ऊपर ला कर) वह raise करते हैं, उठाते हैं, जिस्म से ऊपर लाते हैं।

खैंचे सुरति गुरु बलवान् ।

तो वह परमात्मा है। कहाँ है ? वह हमारी आत्मा के अंतर में है और हमारी आत्मा उसकी अंश है। मगर, आपको पता है, मुश्किल क्या बन गई ? मोह-माया में हम उलझ गये। कैसे उलझ गये ? कारण ? इंद्रियों के भोगों में लंपट हो गये। यह भूल, माया, कहाँ से शुरू हुई ? “एह सरीर मूल है माया।” इस शरीर से। हम देहधारी हैं, देह का रूप बन रहे हैं। आगे जो कुछ देखा, बाहर। पैदा हुए जब से, बाहर देखने लगे। सारी दुनिया के संस्कार हमारे अंतर में आने लगे। इतना भर गया

हमारे हृदय का reservoir (स्त्रोत्र) कि यह दुनिया का रूप हो गया, अपने आप को भूल गया, जीवन आधार परमात्मा को भूल गया। यह मकीन (निवासी) था, जिसम रूपी इस मकान को चलाने वाला, जिस्म का रूप बन गया।

तो इस में मुश्किल क्या बन गई कि मन इसके (आत्मा के) साथ लग गया। यह जीव बन गया। आत्मा अजर-अमर है। जीव बनने पर जन्म भी लेता है, मरता भी है और जाता किधर है ? इंद्रियों के भोगों-रसों में, जहाँ देखता है। इंद्रियां ऐसी खिड़कियां हैं हम में लगी हुई, जो बाहर खुलती हैं, बाहर से संस्कार लेती हैं। तो जन्म से लेकर सारी ज़िंदगी, बाहर के संस्कार ले ले कर, हमारे हृदय का reservoir जो है, बाहरी दुनिया से भर जाता है। सुपने भी दुनिया के आते हैं और बरड़ा कर (सोते में) भी दुनिया निकलती है। तो कब हम उसको (प्रभु को) पा सकते हैं ? जब यह (आत्मा) मन का साथ छोड़ दे। आत्मा मन के अधीन है- जीव बन रहा है। आगे मन, इंद्रियों से खिंचा जा रहा है। इंद्रियों को भोग खींच रहे हैं। यह जिस्म का, जगत का, रूप बन रहा है। था आत्मा देहधारी, देह का रूप बन रहा है। अपने आप को भूल रहा है। आगे कहाँ जाता है ? मन के बस हो कर, इंद्रियों के घाट पर जिस्म और जगत का रूप बना बैठा है। यही कारण है, हम कभी प्रभु की गोद में थे, जब से आए अभी तक वापस नहीं गये, नहीं तो किसी और रंग में बैठे होते।

तो महापुरुष आते हैं। वह यह कहते हैं, अरे भाइयो ! तुम्हारी आत्मा प्रभु की अंश है। तुम शेर के बच्चे हो। मगर मन-इंद्रियों के घाट पर घिरे पड़े हो। यह (मन) तुमको दुनिया में खींच रहा है। समझाने के लिए, कई तरीके हैं समझाने के। कहते हैं, एक शेर का बच्चा था। वह एक पाली के हाथ आ गया। पाली ने उसे भेड़ों में मिला दिया। अब जैसी सोहबत वैसा रंग। वह (शेर का बच्चा) भी भैं-भैं करता फिरे, घास-फूस खाता फिरे। एक शेर वहाँ से गुज़रा। कहने लगा, यह शेर का बच्चा यहाँ भेड़ों में भूल रहा है। उसको बुलाया, देख तू शेर का बच्चा है। नहीं महाराज, मैं तो भेड़ हूँ। उसको पानी के किनारे ले गया। देख तेरी मेरी शक्ति मिलती है ? कहने लगा, हाँ,। कि मैं भी चिंघाड़ता हूँ, तू भी चिंघाड़। जब वह भी चिंघाड़ा, उसने भी गरज की, पाली भी भाग गया, भेड़ें भी भाग गईं। समझाने के लिये है।

अनुभवी पुरुष आ कर कहते हैं, अरे भई तुम सब प्रभु के बच्चे हो, तुम सब आत्मा हो, चेतन स्वरूप हो You are all brothers and sister in God (तुम्हारा आपस में भाई-भाई और भाई-बहन का नाता है)। मन इंद्रियों के घाट पर

भूल रहे हो । कुएँ में फँस गये । नतीजा ? जहाँ आसा तहाँ वासा । तो महापुरुष आते हैं । किस लिये भई ? जीवों को चिताने के लिए, फिर वापस घर लाने के लिये, क्योंकि हमारी आत्मा आखिर प्रभु की अंश है ना ! आत्मा मन के कारण जितना इंद्रियों के भोगों-रसों के कर्मों में, जीव बन कर फंसी हुई है उसके लिये दुखी हो रही है । जब आत्मा आतुर हो जाती है, पुकार करती है तो वह प्रभु है कहाँ ? इसी शरीर रूपी हरि मंदिर में है ।

**तिच्छड वसे सहेलडी जिच्चर साथी नाल ॥
जां साथी उठि चल्लेया तां धन खाकुराल ॥**

जिस्म की सहेली उस वक्त तक आबाद है जब तक हम (आत्मा) उसके साथ हैं । हम साथी हैं ना जिस्म के ? यह पहला हमारा साथी है, जिस्म, जिस को लेकर हम दुनिया में आते हैं और इसी का रूप बन कर माया में आ गये, भूल में फँस गये । आगे मोह में लंपट हो गये । बार-बार दुनिया में आ रहे हैं । कर्म, मन के साथ लग कर करता है, पर भोगता है साथ उसके क्योंकि इसकी (आत्मा की) गाँठ बंधी हुई है (मन के साथ) । जब तक यह गाँठ टूटे नहीं तो काम कैसे बने ? तो महापुरुष जब आते हैं, वह हमेशा यही कहते हैं । देखो ऋषियों-मुनियों ने मानुष जन्म को कर्म भूमि करके कहा है, कर्मभूमि । यह कैसी है ? कुरान शारीफ में आता है, यह आखिरत (परलोक) की खेती है । “अज दुनिया मजलत उलाखिरत ।” यह खेती है कर्मों की । सारे महापुरुष यही कहते हैं -

तुलसी कर्म प्रधान विश्व रच राखा ॥

आखिर क्या कहते हैं ?

जो जस कीन तासु फल चाखा ॥

हम कर्मों के बस चल रहे हैं । जैसे कर्म किये Action-reaction होगा (क्रिया व प्रतिक्रिया) । हम भूल में पड़ गये, जिस्म का रूप बन गये, मोह में फँस गये । नतीजा क्या है ? जैसे कर्म किये वैसा Reaction होगा, अच्छे कर्म करो, बुरे करो । इसलिये गुरबाणी में कहा -

दोष न काह दीजिये, दोष कर्मां आपसे ॥

किसी को दोष न दो भई। हमें यह मानुष जन्म मिला है ना, यह प्रारब्ध कर्म हैं जो फलीभूत हो रहे हैं, उसके मुताबिक यह बना है। जितना लेना-देना पिछले जन्मों का है, किसी का लेना, किसी का देना, किसी का मारा, किसी का कुछ, वह यहाँ पर बदला चुकाना होता है। किसी को देने से प्यार बढ़ता है, किसी को देने से नफरत आती है। समझे ! यह action reaction है पिछले कर्मों का। कोई अमीर है, कोई गरीब है, कोई हाकिम है, कोई महकूम है। यह कर्मों के reaction के मुताबिक है। यह छः चीजें इन्सान के बस की नहीं- जिंदगी-मौत, गरीबी-अमीरी, यश-अपयश। बेअख्त्यार बना चल रहा है। हमारे दफ्तर में एक टाईपिस्ट था। ग्रेट वार (विश्व महायुद्ध) हुई 1914 ई. में, तो वह ईरान गया। वहां उन्होंने आफिस बनाना था एकउंटेन्ट जनरल का। कहने लगे, एकाउंट का काम कोई जानता है ? वह आदमी एकाउंट का काम कोई जानता है। वह आदमी एकउंटेन्ट जनरल बन गया। पीछे Push होता है। एक सोने को हाथ डालता है, मिट्टी बनती चली जाती है। एक मिट्टी को हाथ डालता है, सोना बन जाता है। दूसरे-दोनों एक ही काम करते हैं। एक बड़ा तजरबेकार, माहिर और एक अनपढ़, बिल्कुल नया। जो नया है, वह फायदा उठा जाता है, तज़रबाकार नुकसान उठा जाता है। तो पीछे कुछ चीज़ Reaction में आ रही है, जिसके मुताबिक इन्सान बेअख्त्यार चला जाता है। जपजी साहब में बड़ा निर्णय किया है:

जोर न मंगण, देण न जोर ॥ जोर न राज, माल, मनसोर ॥

यह जोर का मञ्जमून नहीं है। Reaction बेअख्त्यार चला जाता है। जिसने कुछ किया, अमीर बन गया, जिसने नहीं किया, यह गरीब बन गया। सब महापुरुषों ने कहा है—As you sow so shall you reap (जैसा तुम बीज बोओगे वैसा ही फल काटोगे)। मैं यह क्यों आपके सामने पेश कर रहा हूँ ? कि हम को मानुष जन्म मिला है। हम को कुछ करना है कि फिर दोबारा न आयें। जो किया है, भोगेंगे। भई और नई भाजी नहीं डालो। तीन किस्म के कर्म हैं। एक वह, जो हर रोज हम करते हैं। एक प्रारब्ध, जिसके अनुसार यह मानुष जन्म हमें मिला। एक वह हैं जो फलीभूत अभी नहीं हुए, संचित कर्म। वह (महापुरुष) क्या करते हैं अब ? मानुष जन्म तो मिला। अब यह देखना है, नये बीज और न डालो। पिछले जो डाले वह काटना पड़ेगा। उसका कोई ईलाज नहीं। अगर मिर्च को बीजोगे, एक मिर्च को बीजोगे तो क्या होगा भई ? एक पौधा बनेगा जिसमें कई मिर्चें पड़ेगी। एक आम का

बीज बीजोगे ज़मीन में तो उससे दरख्त उगेगा, जिससे सैकड़ों आम लगेंगे। तो बात समझने की यह है कि मौजूदा जो हमारा जन्म है, मानुष तन का, मिल चुका। बड़े भागों से मिला है और बड़े अच्छे कर्मों का नतीजा है क्योंकि यह परमात्मा के पाने का वक्त है। “बाद अज्ञ खुदा बुजुर्ग तोई किस्सा मुख्तसर”। परमात्मा के बाद दूसरा दर्जा इन्सान को है। यह अशरफ उलमखलूकात (सर्वश्रेष्ठ है सृष्टि में) है। इसका शर्फ (बड़ाई) इसी में है कि मानुष जन्म पा कर यह प्रभु का देखने वाला बने। संतों ने कहा -

दोष न काह् दीजिये दोष करमां आपणे ।
जो मैं किया सो मैं पाया दोष न दीजे और जनां ।

तो प्रारब्ध कर्मों के अनुसार—आगर नेक कर्म करोगे तो नेक फल, साहुकार बन जाओगे, और बहुत सारी आसायशें आपको मिल जायेंगी। मगर एक बात ज़रूर है। कैदी के कैदी ही रहोगे। कैद खाना है (यह दुनिया)। इसमें कई कलासें हैं—ए कलास, बी कलास है, सी कलास है। हो सकता है सी से एक कलास आपकी बन जाये, मगर कैद से नहीं आज्ञाद आप होंगे, जब तक कि प्रारब्ध खत्म नहीं होती। तो इसमें तीन किस्म के कर्म हैं, जो मैं अर्ज़ कर रहा था। एक तो वह जो रोज़ कर्म हम करते हैं। उसके मुताबिक यह तन बना है। नये कर्म और बीज हम बीजे जा रहे हैं जिसका Reaction होगा। कुछ पिछले कर्मों के मुताबिक अब हम भोग रहे हैं बेअख्यार। इसके मुतालिक तुलसी साहब और कई महापुरुषों ने कहा -

बनी बनाई बन रही और बनेगी नाहिं ।
तुलसी यह विचार के मागन रहो मन माहिं ॥

वह देख रहे हैं, कैसा Reaction हो रहा है, इसलिये वह घबराते नहीं। वह देखने वाले हैं। किया है अपना, आप पाओ। तो सारे महापुरुष यह कहते हैं, कि जैसा बीज बोओगे, वैसा फल तुम काटोगे। अब प्रारब्ध कर्म से हम फायदा कैसे उठाये? मानुष जन्म से फायदा उठाना है तो फिर और बीज न बीजे जाएं। पीछे जो है वह खुशी से भोग ले और जो संचित कर्म हैं, कैसे हम बचें उनसे? यह बात सोचने वाली है और यह हम मानुष तन ही में कर सकते हैं और किसी में नहीं। धृतराष्ट्र से पूछा गया था कि कौन से जन्म में तुमने ऐसा कर्म किया जिससे पैदा होने से ही तुम अंधे हो। उन्होंने कहा कि मुझे सौ जन्म तक तो मालूम है, योग बल

से । मैंने कोई ऐसा कर्म नहीं किया । तो फिर भगवान् कृष्ण ने अपना बल दिया तो एक सौ छवें जन्म में एक कर्म था जिसका फल वह जन्म से अन्धा हुआ । और सैकड़ों जन्मों के कर्म संचित बाकी हैं । वह जब तक जलें नहीं Reaction होगा (फलीभूत होंगे वह) । आगे जो नये बीज बीज रहे हैं, वह भी Reaction में जायेंगे (फलेंगे) । प्रारब्ध भोगी जायेगी । इसलिये सारे महापुरुषों ने कहा, “कर्म जो जो करेगा तू, वही फिर भोगना पड़ना ।” और सारे महापुरुष यह कहते हैं । सहजोबाई कहती है -

पशु पक्षी, नर, सुर, असुर, जलचर कीट पतंग ।

सब है उत्पति कर्म की, सहजो नाना रंग ।

बस ! अपने-अपने कर्मों का नतीजा भोग रहे हैं सब ही । अब देखिये, दुनिया में देखिये । ऊँट है । नुकेल डाली हुई है, थका हुआ है, नाक से खैंचा जा रहा है बेअख्त्यार । बैठ नहीं सकता । बैठ जाए तो नुकेल से खैंचते हैं, उसका नाक बंद कर देते हैं । हैवान (पशु) है, डंडे खा रहा है । चल नहीं सकता तो उसका नाक बंद कर देते हैं । कितनी बेदर्दी है ? किसी जून में भी लो, हरेक अपनी-अपनी जगह पर दुखी है । सारे महापुरुष यह आ कर देखते हैं, “नानक दुखिया सब संसार ।” और कबीर साहब ने कहा -

देह धर सुखिया कोई न देखा जो देखा सो दुखिया ॥

कोई तन करके, कोई धन करके, कोई मन करके दुखी है । सभी लोग दुखी हैं । अब इन दुखों से बचें कैसे ? जब तक Action Reaction खत्म न हो, तब तक बच नहीं सकते । तो संत-महात्मा ऐसा तरीका बतलाते हैं, जिसके करने से हमेशा के लिये देह में आना न हो, Reaction न हो । वह कैसे हो सकता है ? प्रारब्ध कर्मों के कांटे तो आ रहे हैं । यह पिछले कर्मों का फल है । इनकी चुभन कम हो और नये बीज न बोये जायें, ताकि Action-Reaction (क्रिया-प्रतिक्रिया) का यह सिलसिला जिस से बार-बार आना पड़ता है, खत्म हो । ऐसा उपाय महापुरुष बतलाते हैं ।

सब में परमात्मा की अंश, आत्मा, है । हम सब आत्मा देहधारी हैं और सब का, कंट्रोलिंग पावर, वह परमात्मा हमारे इस शरीर रूपी हरि मंदिर में बस रहा है । देखिये, नौ द्वारे खुले हैं, आंख, कान, नासिका, मुँह और दो नीचे मगर इसमें रहने

वाला आत्मा बाहर भाग नहीं सकता। कोई ताकत उसको धकेल कर वापस ला रही है। वह कंट्रोलिंग पावर जो है उसको परमात्मा कहते हैं, उसको नाम कहते हैं, God into expression power कहते हैं।

नानक नामे के सब किछ बस है पूरे भाग को पाय ॥

तो वह नाम पावर इसी (मानुष देह) में है। तो वह (महापुरुष) क्या करते हैं, उसके साथ जोड़ देते हैं। यह जिस्म की खुराक है खाना पीना, बुद्धि की खुराक है विचारना समझना और आत्मा की खुराक ? परमात्मा के साथ जुड़ना। तो हमने जिस्म को खुराक दी है, बुद्धि को खुराक दी है, नई से नई ईजादें कर डाली हैं। मगर तीसरा पहलू ? हमने क्या किया उसके लिये ? आत्मा चेतन स्वरूप है। उसकी खुराक क्या है ? महाचेतन प्रभु, Bread of life, Water of life (जिंदगी की रोटी और पानी है जो) वह कहाँ है ? हमारे अन्तर में है। कहीं गुप्त है, कहीं प्रकट है। तो महापुरुष आते हैं, इसलिए कि वह आ कर पिछली प्रारब्ध को बड़ा Clarify (स्पष्ट) करें, कि अरे भई जो कुछ तुम्हारा यह बना है, यह तुम्हारे अपने कर्मों का नतीजा है। आगे ऐसे बीज न बीजो जिससे Reaction हो। क्राईस्ट से पूछा गया, तुम किस लिये यहाँ आये हो ? कहने लगे, मैं भाई को बहन से जुदा करने आया हूँ और माँ को बच्चे से अलैहदा करने आया हूँ। स्त्री को पति से और पति को स्त्री से जुदा करने आया हूँ यह (जीव) माया, भूल में फंस कर मोह में फंस जाता है, मोह से छुड़ाने आया हूँ। और बार-बार हमारा दुनिया में आने का कारण क्या है ? मोह ! जहाँ आसा तहाँ वासा। फिर यह कहा कि भाई तुम किस लिये आये हो ? तो कहने लगे (क्राईस्ट) मैं दुनिया को शांति की नगरी बनाने के लिये नहीं आया। बड़े साफ़ लफ़ज़ हैं। बल्कि जीवों को इस से आज्ञाद करने आया हूँ। दो किस्म की ताकतें परमात्मा की काम करती हैं दुनिया में-एक काल, एक अकाल, एक Positive Power एक Negative Power.

काल अकाल खसम का कीना एह प्रपंच बंधावन ॥

काल और अकाल उस मालिक के बनाये हुए हैं, क्योंकि यह प्रपंच रचना था। दोनों की ज़रूरत थी। बिजली एक ही है मगर कहीं वह आग जलाती है और कहीं बर्फ जमाती है। तो यह दो phases (पहलू) हैं भई, काम के। तो काल के अवतार भी दुनिया में आते हैं, और अकाल के अवतार भी आते हैं। काल के अवतार का

क्या काम होता है ? “जब जब धर्म की ग्लानि होती है, मैं अवतार धारण करता हूँ अधर्मियों को दंड देने के लिए, धर्मियों को उभारने के लिए और दुनिया की स्थिति को कायम रखने के लिए” (गीता)। और सन्तों का काम ? वह भी उसी बिजली का अवतार हैं मगर उनका Phase of work (कार्यक्षेत्र) अलग है। वह किसलिए आते हैं।

तुरंत मिलावें राम से उन्हें मिले जो कोय ॥

यह तो दुनिया को शांति का नगर बनाने आते हैं (काल के अवतार) स्थिति कायम करने आते हैं, अधर्मियों को दंड देते हैं, धर्मियों को उभारते हैं। और संत ? दुनिया को गैर-आबाद करते (उजाड़ते) हैं। समझे ! Action Reaction (कर्म का विधान) सब पर चलता है। अब संत कैसे इन कर्मों से आज्ञाद करते हैं ? सवाल यह है। वह क्या करते हैं ? आत्मा को—यह मज्जमून बहुत लम्बा है, मगर थोड़ा, कुछ अब, कुछ कल, जो मेरी समझ में आया, आपके सामने रखा जाएगा। वह Conscious Coworker बना देते हैं Divine Plan का। तो Bread of life (जिंदगी की रोटी) आत्मा को मिलने से यानी नाम के साथ लगने से, आत्मा बलवान हो जाती है। दुनिया के दुख-सुख ज़रूर आते हैं। हमारे हजूर (बाबा सावन सिंह जी महाराज) फरमाते थे कि कांटे दुनिया के सब साफ नहीं कर सकते, इतना कर सकते हो कि पैर में मज्जबूत बूट पहन लो ताकि तुम्हें वह चुर्खें नहीं। कांटे तो नहीं दूर हो सकते। जब आत्मा को खुराक मिल जाने से आत्मा बलवान हो जाये—प्रारब्ध कर्मों के साथ दुख भी आते हैं, सुख भी आते हैं, गरीबी भी आती है, अमीरी भी आती है, जन्म भी लेते हैं, मरते भी हैं, मगर उनकी आत्मा चूँकि बलवान है, उनको Pinching नहीं रहता। मार पड़ रही हो कहीं, पांच-सात आदमी बड़े मज्जबूत हों, एक बीच में कमजोर हो, डांगें पड़ रही हों। तो जो कमज़ोर है, एक डांग पड़े तो वह चीखता है, पुकारता है, मारा गया, मर गया, और दूसरे कहते हैं, यार पड़ी तो बहुत मगर असर एक नहीं। समझे। जो आते हैं, ना संत, उनके भी मरते हैं माफ़ करना, उन को भी अमीरी-गरीबी आती है। मगर उसमें आगे कर्म नहीं करना चाहते ताकि Reaction न हो।

रविदास जो चमार थे। जूता गाँठ कर गुजारा करते थे। मीराबाई शाहजादी उनके पास गई। ख्याल आया, यह जूते गाँठते हैं, मेरे गुरु हैं। एक लाल उन को दिया कि इससे कोई मकान-वकान बना लो। कुछ आसायश (जायदाद) हो जाये। उन्होंने ना

की, कहने लगी, ज़रूर लो। कहते हैं अच्छा, रख जाओ यहां कहीं। वह छज्जे में रख गई। फिर साल के बाद आई, देखा तो वही जूता गांठ रहे थे। महाराज मैं तो लाल छोड़ गई थी। कि वहीं होगा। अनुभवी पुरुष अपनी कमाई पर जीते हैं। पहली बात। “खट्ट घाल किछु हत्पों दे, नानक राह पछाणे से।” बाकी संगत की अमानत। समझे! कबीर साहब जुलाहे थे। इब्राहम अधम उन के पास गये कि नहीं। बादशाह थे। मगर (कबीर साहब) अपना ताना बुन के गुजारा करते थे। तो जब आत्मा की खुराक मिल जाती है तो वह (अनुभवी पुरुष) दे देते हैं, Conscious Coworker of the Divine Plan बना देते हैं, आत्मा को मन-इंद्रियों से आज्ञाद कर के देखने वाला बना देते हैं तो आत्मा बलवान हो जाती है। On spiritual health depends the life of mind and body both. (आत्मा के स्वास्थ्य पर शरीर और मन का जीवन आधारित है)। तो आत्मा को खुराक मिलने से, दुनिया के दुख-सुख आते तो हैं, असर नहीं करते। जो उन के पास जाते हैं उनको भी आत्मा की खुराक मिलती है। वह क्या है? कि आत्मा, जो इस वक्त मन-इंद्रियों के घाट पर धिरी पड़ी है, उसको वह (महापुरुष) खींच ऊपर ले आते हैं, प्रभु से जोड़ देते हैं। वह प्रभु कहां है? वह हमारी आत्मा की आत्मा है। हमारी आत्मा जो इस वक्त मन-इंद्रियों के साथ लग कर, इंद्रियों के घाट पर, जिस्म और जगत का रूप बन रही है, फैलाव में जा रही है, अब उस को बाहर से हटाये, इंद्रियों के घाट से ऊपर लाये। इस जिस्म के दो हिस्से हैं। एक आँखों तक, एक ऊपर। जिस्म में तो पैदा हो गया ना, बल्कि घर से दूर चला गया। जब ऊपर आये तो घर के नज़दीक आ गए। तो पिंड से ऊपर ले जा कर उसकी आँख खोल देते हैं, उसको पूंजी दे देते हैं देखने की, Bread of life (ज़िंदगी की रोटी) और Water of life (ज़िंदगी का पानी) दे देते हैं। उससे आत्मा बलवान हो जाती है। जब वह देखने वाला बन जाता है कि वह प्रभु कर रहा है, मैं कुछ नहीं कर रहा तो -

मेरा किया कछू न हो, जो हर भावे सो हो।

जब हुक्म के पहचानने वाला बन गया -

नानक हुक्मे जे बुझे तां हौमे कहे न को॥

इस तरह उनका सारा हिसाब Wind up (खत्म) हो जाता है, जब गुरु मिलता है। इसलिये महापुरुषों ने कहा कि किसी गुरु या अनुभवी पुरुष के पास हम किस

लिये जाते हैं ? कि हमारे कर्म Wind up हो जाए। गुरबाणी में आता है -
गुर गुण केहो जगत गुरा जे कर्म न नासे ॥

कि हे जगत गुरु, तुझे गुरु धारण करने का हमें क्या फ़ायदा जो कर्मों का नाश
न हो ।

सिंह सरण कत जाईये जो जुम्बक ग्रासे ॥

शेर की शरण जाने का क्या फ़ायदा अगर वहां भी गीदड़ (कर्म के) भभकियां
मारें। बात समझे। कर्मों की मार में सब कोई है। इससे कैसे गुरु छुड़ाता है ? सारे
महापुरुष कहते हैं कि सारा जहान, हर कोई, कर्मों से बंधा हुआ है। मौलाना रूम
फरमाते हैं -

ई जहां जिन्दानो मा जिन्दानियां

यह जहान कैदखाना है और हम कैदी हैं। तो क्या करें ?

हज्जे कुन जिन्दाने खुदरा राह कुन ।

कहते हैं, इसकी छत में सुराख करके, ऊपर निकल जाओ। बाहरी कर्म करते
हुए, जो इंद्रियां, यह खिड़कियाँ खुली हैं, बाहर के संस्कार लेती हैं। आप कैसे बच
सकते हो, बाहर के संस्कारों से ? महापुरुषों ने मिसालें दे कर समझाने का यत्न
किया है। “काजल की कोठड़ी में कैसो ही सियानो बने, दाग लागत पर लागत पर
लागत है।” काजल हो, कितनी ही एहतयात करो, दाग तो लग जाएगा कपड़े को।
और महापुरुषों ने समझाने के लिए कहा -

दर कारे दरिया तख्ता बन्दम करदई ।

बाद मीगोई के दामन तरमकुन हुश्यार बाश ॥

दरिया के बीच एक तख्ते पर हमें बिठा दिया और अब कहते हैं, खबरदार रहो !
कपड़े न भीग जाएं। अरे भई कैसे न भीग जाएं ? इंद्रियां बाहर खुल रही हैं। बाहर
के संस्कार आ रहे हैं। हर रोज़ और संस्कार बैठे जा रहे हैं। इससे कैसे बचें ? कहते
हैं, सुराख कर लो, ऊपर निकाल जाओ। You must be reborn (पिंड से ऊपर
आ कर एक नई जिंदगी में जाग उठो)। एक जन्म तो इसमें (शरीर में) लिया है।
इससे ऊपर जाओ जहां जिंदगी की रोटी और जिंदगी का पानी मिलता है। वहां

Conscious Coworker of the Divine Plan बन जाता है (देखने वाला बन जाता है कि वह प्रभु काम कर रहा है, मैं नहीं कर रहा, कर्तापने का भाव जाता रहता है)। तो पिछले कर्म, संचित कर्म, सब खत्म हो गये। जब भोगने वाला ही न रहा कोई, कौन भोगेगा ? जब मैं-पना होगा तभी भोगेगा ना !

जब एह जाणे मैं कुछ करता, तब लग गर्भ जून में फिरता ॥

जब यह कहता है मैं करनहार हँ, दिल की तह की तह में, तो उसका Action-Reaction (क्रिया-प्रतिक्रिया) होगी। भगवान् कृष्ण ने कहा, “नेक कर्म और बुरे कर्म, जीव को बांधने के लिए दोनों एक समान हैं, जैसे लोहे की बेड़ी और सोने की बेड़ी।” अगर Conscious Coworker of the Divine plan बन जाएगा, इंद्रियों के घाट से ऊपर आ कर, यह अनुभव हो जाएगा कि, “मेरा किया कछु न होए जो हर भावे सो हो” फिर कौन भोगेगा भई ? जैसे दाने हों। भट्टी में भून लिये जाएं, फिर वह उगते नहीं। तो इस तरह से क्रियामान कर्म आगे से साफ कर देते हैं। प्रारब्ध को छेड़ते नहीं, नहीं तो नाम देने के साथ ही खत्म हो जायें। और संचित कर्म Conscious Coworker बना देने से खत्म हो जाते हैं। तो गुरु की शरण में जाकर -

जे को जन्म-मरण ते डरे, साथ जनां की शरणी पड़े ॥

तो कर्मों के अधीन सब कोई है। सब महापुरुषों ने खोल-खोल के बयान किया है। कबीर साहब ने तो बड़ा लंबा-चौड़ा किस्सा बयान किया है।

तन धर सुखिया कोई न देखा जो देखा सो दुखिया हो ।

जोगी दुखिया जंगम दुखिया, तपसी का दुख दूना हो ।

आशा तृष्णा सब को त्यापे कोई महल न सूना हो ।

घाटे बाड़े सब दुख दीजा क्या गृही क्या बैरागी ।

कहे कबीर सकल जग दुखिया संत सुखी मन जीती ।

जिन्होंने मन को जीत लिया वह सुखी, बाकी सब दुखी। मन के साथ लग कर गांठ पड़ी हुई है ना। अगर यह गांठ खुल जाए तो आत्मा सत् चित आनंद है। यह गांठ कहां तक चलती है ? इस पिंड में पिंडी मन काम करता है, अंड में अंडी मन काम करता है, ब्रह्मांड में ब्रह्मांडी मन काम करता है। जब तीनों के पार जाए तो मन

की गांठ खुले। तो आत्मा, सतनाम, सतपुरुष की अंश है। मन ब्रह्म की अंश है, जो बद रहा है। विरह धातु से निकलता है—ब्रह्म—जो Expression (इज़हार) में जा रहा है। तो यह ग्रंथी खोली जाती है। तुलसी साहब ने इसीलिये कहा, “कोई तो तन-मन दुखी, कोई नित उदास। एक न एक दुख सबन को सुखी संत का दास।” सब कोई दुखी हैं। कौन सुखी ? कोई संत का दास। वह क्यों सुखी ? संत किसको कहते हैं ?

हमरो भरता बड़ो विवेकी आपे संत कहावे ॥

कि हमारा भरता बड़ा विवेकवान है। जिस घट पर वह प्रगट होता है, उस को संत कहते हैं। The manifested God in man (मानव घट में प्रकट प्रभु) जो है, उसको साधु संत या महात्मा कहते हैं। आलम-फ़ाज़ल का नाम साधु संत महात्मा नहीं, ग्रंथकार का नाम साधु संत महात्मा नहीं। बाहरमुखी इंद्रियों के घाट के साधन बतलाने वाले का नाम साधु संत महात्मा नहीं। संत किसका नाम है ? अपनी आत्मा को मन इंद्रियों से आज्ञाद करके जिसने अपने-आपको जाना है और प्रभु का अनुभव करके उसका स्वरूप बन चुका है, He is the mouth-piece of God (वह प्रभु का मुख है) उसका नाम साधु संत महात्मा हैं। वह देखता है। जो उसके पास जाते हैं वह देखने वाले बन जाते हैं। संतों के पास जाओ तो वह क्या करते हैं ? हम सुख के लिए कोशिश करते हैं। जितना सुख के लिए कोशिश करो—और सारा जहान सुख के लिए कोशिश करता है—मगर और दुख ही दुख बढ़ता चला जाता है। आत्मा को सुख कब हो सकता है ? आत्मा मैंने अर्ज किया, सत्, चित् और आनंदमय है। सत् है, Eternal है, विनाश से रहित है। All wisdom (अक्ले कुल, सर्वज्ञ) है, और आनंदमय है। बाहर दुनिया में इसको सुख कहां नज़र आता है ? इंद्रियों के भोगों रसों में। कितनी देर ? हम समझते हैं हम भोगों को भोगते हैं मगर वह हमें भोग लेते हैं।

विष्णु भगवान के पास अन्न देवता ने जाकर शिकायत की कि लोग मुझे बड़ी बेदर्दी से खाते हैं। कहने लगे, जो तुमको ज़रूरत से ज्यादा खायें तुम उन को खा जाया करो। यह बीमारियाँ कहाँ से पैदा होती हैं ? जो हज़म नहीं होती है चीज़। भोग भोगते-भोगते हम भोगने के काबिल ही नहीं रहते, भोग हम को भोग लेते हैं। तो दुनियां में भी सुख उतनी देर मालूम होता है, जितनी देर तक हमारी सुरति या आत्मा किसी चीज़ से जुड़ी रहे। अपना इसमें आनंदमय होने का जो गुण है ना,

उससे जुड़कर आनंद लेता रहता है। जब वह चीज़ हट जाए या हम हटा लिए जाए, दुख हो जाता है। तो इसलिये चित्त किस से लगाना चाहिये ?

जो सुख को चाहे सदा शरण राम की ले ॥

जो हमेशा के निजानंद को पाना चाहता है, वह आत्मा को परमात्मा के साथ, जो रम रहा है, उसके साथ जोड़े। वह न जन्म में है न मरण में। “न ओह मरे न होवे सोग !” हमेशा की जिंदगी को पा जाता है। तो महापुरुष क्या करते हैं ? खाली ज़बानी ही नहीं कहते, उस रब्बी (ईश्वरीय) रिश्ते के साथ परमात्मा के साथ जोड़ देते हैं। है पावर एक ही, उसके अनेकों नाम रखे गये हैं समझाने बुझाने के लिए, “बलिहार जाऊं जेते तेरे नाओं हैं।” हम इन सब नामों पर बलिहार जाते हैं राम-राम कहो या अल्लाह कहो या वाहे गुरू कहो या खुदा कहो, ख्वाह सारी बाणी पढ़ दो, या एक औंकार सतनाम कहो या पढ़ते चले जाओ, जिसके लिये यह बरते गये हैं ना लफ़ज़, उसको जानना ही असल कलमा, असल नाम है।

राम राम सब को कहे कहिये राम न होय ॥ गुर प्रसादी राम मन वसे तो फल पावे कोय ॥

अगर वह रमा हुआ परमात्मा, हमारे अंतर Manifest (प्रकट) हो जाए, तो कहते हैं, राम राम राम कहने से, प्रभु का नाम लेने से नशा आ जाएगा। यह “गंदलां विस भरियां”-गंदलें (डंठलें) ज़हर से भरी हैं “नाल खंड लबाड़ !” खांड से लिपटी हुई हैं। जो सुख हम समझते हैं, वह सुख असल में नहीं। वह अपना सुख उसमें जुड़कर हम लेते हैं। उस चीज़ में सुख नहीं है। आत्मा चेतन को जड़ पदार्थों में क्या सुख हो सकता है ? कुत्ता हड्डी को खा रहा हो, हड्डी में क्या रस है ? वह अपना खून बहता है (ज़बान से) पी पी कर मस्त होता है। यह कब एहसास होता है ? जब इन्सान अपनी आत्मा को मन-इंद्रियों से आज्ञाद करे तो इन बातों की समझ आने लगती है और अमली तौर पर इनका अनुभव करने लगता है। अब क्या कहते हैं, इस हालत में हमें क्या करना चाहिए ? एक बात चाहिये। अगर बच्चा बाहर दुनिया में तमाशा देख रहा हो, बड़ी बाहर भीड़-भाड़ है। बच्चा अपनी माता के हाथ को अगर पकड़े रखे तो भीड़-भाड़ में बिछुड़ेगा नहीं इसी तरह महापुरुष कहते हैं -

नमे गोयम के अज्ज दुनिया जुदा बाश । बहर कारे के बाशी बाखुदा बाश ॥

यह तुमको नहीं कहा जाता कि दुनिया को छोड़ छाड़ कर जगंलों की राह लो ।

मगर जो काम करो उसको (प्रभु को) नहीं भूलो । एक और बात । हो सकता है बच्चे का हाथ छूट भी जाए । अगर माता ही उसके हाथ को पकड़ ले खुद, तो अपना हाथ Dedicate कर दो, Surrender (हवाले) कर दो । परमात्मा को देखा नहीं, अगर Manifested God in man को (जिस मानव घट में प्रभु प्रकट है उसको) भी surrender (हवाले) कर दोगे, तो परमात्मा तुम्हारा हाथ नहीं छोड़ेगा । बात समझे ? गुरु का मिलना बड़े भागों से होता है ।

कर्म होय सत्यरु मिलाय, सेवा सुरत-शब्द चित लाय ॥

वह हमारी सुरति (आत्मा) को परमात्मा से जोड़ देता है । तो जो महापुरुष आते हैं, क्या अनुभव देते हैं ? We are all one. हम सब (इंसान इंसान) एक हैं । हम आत्मा हैं चेतन स्वरूप हैं । A drop of the Ocean of All Consciousness (महाचेतन प्रभु के समुद्र के कतरे हैं) मन इंद्रियों के घाट पर धिरे पढ़े हैं, जिस्म और जगत का रूप बन रहे हैं । यही बीमारी है हमें । जो इससे आज्ञाद हैं, “मुक्ते सेवे सो मुक्ता होई ।” जो इससे आज्ञाद नहीं Self analysis करके (मन इंद्रियों से अलैहदा कर के) Rise above नहीं किया (पिंड से ऊपर नहीं आया) इसकी Demonstration नहीं दे सकता (मन इंद्रियों से आत्मा को ऊपर लाने का व्यक्तिगत अनुभव नहीं दे सकता) । अरे ऐसे पुरुष से मिलने से तुम्हारी कल्याण नहीं, आना जाना बना रहेगा । इसीलिये सारे महापुरुष क्या कहते हैं -

भीखा भूखा को नहीं सब की गठड़ी लाल ॥

कि सब में वह प्राभु बैठा है ? सब में उसी की अंश है । We are all brothers and sisters in God (सब हम उस प्रभु के बच्चे हैं । हमारा आपस में भाई-भाई और बहन भाई का नाता है) जिस्मानी (शारीरिक) तौर पर भी, All man kind is one (मानव जाति सब एक है) ।

मानुष की जाति सब ऐके पहचानबो ।

हम ने समाजों के लेबल लगाये हैं ना बतलाने के लिए, कि किस स्कूल में पढ़ रहे हैं । हैं तो इंसान कि नहीं । “आई पंथी सकल जमाती ।” सब से बड़ा पंथ मज़हब क्या है ? कि हम एक जमात में पढ़ रहे हैं । कोई हिंदु, कोई मुसलमान, कोई सिख, कोई ईसाई । मुखतलिफ लेबल लगाए हुए हैं । पढ़ रहे हैं । तो मानुष जन्म को पा कर

प्रभु को पाने में कौन कामयाब हो सकता है ? “मन जीते जग जीत ।” जो मन को जीत ले, कंट्रोल में कर ले । अब इस वक्त आत्मा को मन खींच रहा है, मन को इंद्रियां खींच रही हैं इंद्रियों को भोग खींच रहे हैं । यह हालत बनी पड़ी है । मन को लज्जत चाहिये । जब इस को इस से ज्यादा लज्जत अंतर में मिल जाए तो फिर बाहर यह नहीं जाएगा । अब तो खींच-खींच कर इसको बाहर से हटाओ, यह हटता नहीं । फिर इस को अंतर रस मिल जाए तो बाहर आता नहीं । तो अनुभवी पुरुष आप को अंतर वह रस दे देता है जिस को पा कर आत्मा फिर बाहर भटकती नहीं । तो महापुरुष क्या कहते हैं ?

एक पिता एकस् के हम बालक

और

सबनां जीयां का इक दाता ।

सारे महापुरुष जब-जब किसी मुल्क में आए, किसी समाज में आए, सब का यही कहना है, वह रब्बुलआलमीन (प्रभु सब सृष्टि का) है, रब्बुलमुसलमीन, हिंदु, सिख, ईसाई, बौध और जैन नहीं । और क्या कहते हैं सब ?

बनी आदम आज्ञाए यक दीगरन्द । चू दर आफरीनश ज्ञेयक जौहरन्द ।

हम सब असलियत में, एक आदमी के जैसे बाजू होते हैं ना, पांव और दूसरे आज्ञा (इंद्रियां) होते हैं ऐसे ही हम परमात्मा के सब हैं । हम एक दूसरे से जुड़े पड़े हैं । कंट्रोलिंग पावर एक ही है जो चला रही है सब को । तो सारे महापुरुष यह कहते हैं, “जग जीवन साचा एको दाता ।” संत आ कर तौहीद को (एक प्रभु की पूजा को) पेश करते हैं, और तौहीद के पेश करने से उस से (प्रभु से) प्यार करना सिखाते हैं । प्यार कब बनेगा ? सुनने से शौक बन सकता है । किसी महापुरुष को देखने से भी कुछ शौक बनेगा ।

सुभर भरे प्रेम रस रंग । उपजे चाव साध के संग ।

वह प्रभु के प्रेम और नशो के लबालब भरे प्याले होते हैं । उन को देख कर अंतर में चाव बनता है । मगर जब वह उसके (प्रभु के) साथ जोड़ दें, तभी काम हो सकता है । मानुष जन्म पा कर हम बार-बार दुनिया में क्यों आ रहे हैं ? हम आनंदमय हैं, प्रेम मुजस्सम (सदेह प्रेम) हैं । इस का (आत्मा का) खासा (गुण) है कहीं न कहीं लग कर रहेगा । यह इस वक्त भूल में पढ़ कर बाहरी सामानों के साथ

लग रहा है। नतीजा ? बार-बार दुनिया में आ रहा है। कुरान शरीफ में आता है, “अलमोमिन लाबुदी मिन महबूब ।” कि मोमिन के लिये लाज़मी है उस का कोई प्रीतम हो। आत्मा का प्रीतम बनना था परमात्मा ने, बन गई दुनिया। नतीजा ? बार-बार दुनिया में आता है। दुनिया में इस को थोड़ा-बहुत सुख जो मिलता भी नज़र आता है वह क्षण भंगर है, हमेशा नहीं रहता। इसलिये कहते हैं किस से लौ लगानी चाहिये ? फ़ना चीज़ों से क्यों लौ लगाये ? गुरु नानक साहब ने बड़ा अच्छा नक्शा खींचा है -

कूड़ राजा, कूड़ प्रजा, कूड़ सब संसार ।

कूड़ कहते हैं फ़ना (नाश) हो जाने वाला, एक रस न रहने वाला ।

कूड़ मंडप कूड़ माड़ी कूड़ बैसणहार ॥

कूड़ मियां, कूड़ बीबी, खप होए ख्वार ॥

कूड़े कूड़े नेह लग विसरेया करतार ॥

किस नाल कीजे दोस्ती सब जग चल्लणहार ॥

तो महापुरुष कहते हैं, तुम ऐसी चीज़ों से प्यार बनाओ, लौ लगाओ जो फ़ना (नाश) से रहित है। वह कौन है ? वह परमात्मा है। उसकी कौन जात है भई ? कोई जात-वरण है उसका ? यहां आकर हम हिंदु, मुसलमान, सिख, ईसाई, ब्राह्मण, खत्री, वैश, शूद्र बन गये। उसकी क्या ज्ञात है भई ? जब उसकी जात-पात कोई नहीं, “र्वण जात चिन्ह नहीं कोई सब हुकमे सृष्टि उपायेदा।” जब उसकी कोई ज्ञात नहीं, हमारी क्या ज्ञात है ? आत्मा की ज्ञात वही है ना जो परमात्मा की ज्ञात है। यह तो जिस्म की जातें-पातें बना रखी हैं। जिस ने ब्रह्म को बिंधा, वह ब्रह्मण बन गया। जिसने मुल्क की रक्षा का काम किया वह क्षत्री बन गया। जिसने लोगों को खाना-दाना पहुंचाया, वैश बन गया। बाकी सेवा में जो लगा, शूद्र बन गया। फिर अब ब्राह्मण का बेटा ब्राह्मण माफ करना कितनी भूल है। ब्राह्मण भी आत्मा देहधारी है। उसने ब्रह्म का अनुभव किया है। “ब्रह्म बिंधे सो ब्राह्मण होइ।” यह कोई जात-पात नहीं। हो सकता है, पिता ब्राह्मण हो, लड़का उसका क्षत्री बने, हो सकता है शूद्र बने। यह ज़रूरी नहीं कि वही हो। तो मेरे अर्ज करने का मतलब है, जब प्रभु की कोई जात-पात नहीं तो हमारी क्या जात-पात है। बड़ी साफ़ बात। अगर तुम प्रभु से प्यार करो तुम्हारी ज्ञात प्रभु। आप देखिये, सैना नाई था, कबीर साहब जुलाहे थे, रविदास जी चमार थे, नामदेव छींबे थे। इसी तरह और - तुलसी साहब ब्राह्मण थे। तो मेरे अर्ज करने का मतलब है, प्रभु की नज़र में जात-पात कोई

नहीं, इंसान-इंसान है। आगे आत्मा देहधारी है। आत्मा की ज्ञात वही है जो परमात्मा की है। जब-जब महापुरुष आते हैं, लोग जो भूल में पड़ जाते हैं, उनको वह निकालने आते हैं। जब-जब महापुरुष आते हैं, समझाते हैं। आखिर होना क्या है? “अमलां ते होण नबेडे।” फैसला तो अमलों (कर्मों) पर होगा, “खडिया रहण गिया जातां।” यह पंजाबी मिसाल है। ज्ञातें-पातें जिसमें के साथ हैं। इस को (जिसमें को) तो या मिट्ठी में दबा दोगे या आग की नज़र (भेट) कर दोगे। और आत्मा की ज्ञात वही जो परमात्मा की ज्ञात है। हाँ इसमें शिलाफ चढ़े हैं, स्थूल का उत्तरा, अंदर सूक्ष्म देह है। सूक्ष्म में जो रंग भर गया वैसे आगे जन्म लेना पड़ता है। तो यही बात समझनी है।

बड़े बड़ाई पाय कर रोम-रोम हंकार।

इंसान बड़ाई पा कर अहंकार में लदा फिरता है।

सत्गुरु के परिचय बिना चारों वर्ण चमार॥

जब तक सत्स्वरूप हस्ती नहीं मिलती, सब चमार हैं। चमार किसको कहते हैं? जो चमड़े में फंस रहे हैं। हम सब चमार है माफ़ करना। जब तक चमड़े से निकलते नहीं तब तक चमारपने से कैसे निकलेंग।

आपको पता है, अष्टावक्र ने जब राजा जनक को ज्ञान दिया है। राजा जनक ने स्टेज तैयार की कि इस पर वह महापुरुष आ कर बैठे जो मुझे अनुभव कराये। किस का? उस प्रभु का। कितनी देर में? जैसे घोड़े पर सवार होते हुये एक रकाब में पांव रख कर दूसरी में रखता है। सब हैरान थे, क्या सिखायें, क्या समझायें, क्या बुझायें। तो अष्टा वक्र वहाँ थे। ब्रह्मज्ञानी थे मगर जिसमें कुछ बेडौल था। आठ बल पड़ते थे - अष्ट वक्र। वह आ बैठे। हरेक आदमी को अपने पर भरोसा होता है ना, जो रोज़ करता है, Profession (पेशा) है। यह भी, जैसे धोबी का पेशा है सब मैलों को धोना, उसको एतबार है अपने Profession पर, एक भट्टी नहीं, दो दे दूँगा। अनुभवी पुरुष को भी एतबार है कि Self-analysis करके (आत्मा को मन इंद्रियों से अलैहदा करके) मैं इसे साफ़ कर दूँगा। तो अष्टावक्र आ कर बैठ गये स्टेज पर। जिसमें बेडौल था। कुछ बात भी बड़ी अनोखी थी। सब हंस पड़े। कहने लगे (अष्टावक्र), राजन्! तुमको ज्ञान चाहिए? कहने लगे, हाँ महाराज! कहते हैं, फिर यह चमारों को क्यों इकट्ठा कर रखा है, जिन की नज़र मेरे चमड़े पर है, मेरी

आत्मा पर नहीं। बात समझते हो ? हम सब उस प्रभु के बच्चे हैं। We are all micro-Goods. प्रभु की अंश हैं। “वल रूह मिन अप्रे रब्बि।” हमारी ज्ञात वही है जो परमात्मा की ज्ञात है। दुनिया इसी में (जातों-पातों में) छूट कर मर जाती है। तुलसी साहब ने इसलिये कहा -

नीच नीच सब तर गये संत चरण लिवलीन ।

कौन तर गये ? जिन को अनुभवी पुरुष मिल गये। उनके चरणों में उनकी लिव लगी।

जाति के अभिमान से दूबे बहुत कुलीन ॥

बड़े कुल वाले, बड़े अमीर, सब जो अभिमान में रहे वह मर गये। इसलिए महापुरुष कहते हैं -

पलटू ऊंची ज्ञात का मत को करे हंकार ।

साहब के दरबार में केवल भक्ति प्यार ॥

जो भक्ति करे ले जाए। भक्ति प्यार। आप देखो, इतिहास भरे पड़े हैं हमारे सामने। दुर्योधन के यज्ञ हुआ। भगवान् कृष्ण कहाँ गये ? विदुर के घर। वहाँ क्या खाया ? साग। मलक भागो ने यज्ञ किया। गुरु नानक साहब को बुलाया। गये, मगर यज्ञ में शामिल नहीं हुए। कहाँ गये ? लालो तरखाण के यहाँ, जिस को एक अनाज की रोटी भी नसीब नहीं थी, मगर था भक्त। जब दूसरे दिन मलक भागो ने बुलाया उनको, कि तुम आए थे, यज्ञ में शामिल नहीं हुए। महात्मा बड़े साफगो (स्पष्ट वक्ता) होते हैं। कहने लगे, मैं आ कर लोगों का खून निचुड़ा हुआ कैसे खाता ? यह क्या कहा ? कि ठीक है। भई “दसाँ नहुवां दी किरत” कहो, ईमानदारी से, कौन इकट्ठा (धन)कर सकता है माफ करना ! “पापां बाझों होए न कट्ठी ते मोयाँ साथ न जाई।” किसी को ज़ाहिरदारी, किसी को दरपर्दा, कुछ बनाना पड़ता है। तो कहने लगे अपना खाना लाओ। एक हाथ में मलक भागो का खाना रखा, दूसरे में लालो तरखाण का रखा, दोनों को निचोड़ा। तो लालो तरखाण की रोटी से दूध के कतरे निकले और मलक भागो के खून के। तो मेरे अर्ज करने का मतलब है, जब तक अनुभवी पुरुष मिले नहीं प्रभु का प्यार पैदा नहीं होता। प्यार ही प्रभु को मंजूर है। बाकी जातों-पातों का सवाल नहीं भई। गुरु नानक साहब कहते हैं।

बिन नाँवें सब नीच ज्ञात ।

चलो झगड़ा पाक । जिसकी आत्मा अंतर प्रभु से नहीं जुड़ी, वह सब नीच ज्ञात हैं । समझे !” “विष्टा के कीड़े होवे जिस नाम हृदय सो ही बड़ राजा ।” फिर आखिर क्या कहते हैं ? “जिस नाम हृदय तिस पूर्ण गुर काजा ।” तो जिसकी आत्मा प्रभु से मिल गई, वह सब से अमीर, सब का राजा । उसकी जात वही है जो परमात्मा की ज्ञात है । महापुरुष आते हैं तो किस Level से आप को देखते हैं ? या तो मानवता के Level से या आत्मा के । बाहरी समाजों के लेबलों से नहीं देखते । हम भूल में पड़ते रहते हैं । महापुरुष ऐसे ज़मानों में आते हैं तो इस भूल से लोगों को निकालते हैं । आगे दो मजहब पर्वन थे, हिंदु और मुसलमान । आज कल सात सौ कितने मजहब हैं । आज इस तालीम की अजहद ज़रूरत है । यही एक सब मुश्किलों का हल है । “सरब रोग को औखद्य नाम ।” तो महापुरुष आते हैं, दुनिया को इस बात को पेश करते हैं Practically (अनुभव रूप में) ।

शब्द वसे सोई जन ऊंचा सच्चे आप समावणेयां ।

बात समझे हो ? तो अनुभवी पुरुष क्या करते हैं ? वह परमात्मा है कहां ? वह हमारा जीवन आधार है ।

काया अंदर जगजीवन दाता वसे सबनां करे प्रतिपाला ॥

यहां बैठा है, कंट्रोलिंग पावर है । हमारी हरेक हालत को देखता है । सारे संसार को कंट्रोल कर रहा है । करोड़ों ब्रह्मण्ड हैं, कभी टकराते नहीं । कितने संयम से जा रहे हैं ! जब वह ताकत हट्टी है, प्रलय-महाप्रलय हो जाती है । इस शरीर से वह पावर हट्टी है तो जिस्म छोड़ना पड़ता है । वह सब का है । सब के अंतर है ।

है सब कुछ घर में बाहर नाहिं ॥ बाहर टोले सो भरम भुलाहिं ॥

उस Bread of Life को पाना हो तो अंतर में ढूँढ़ो । वह तुम्हारा जीवन आधार है । है सारी जगह परिपूर्ण । कोई ऐसी जगह नहीं जहां वह नहीं है । मगर बिजली जहां पावर हाऊस में इकट्ठी है, तुम्हारे सारे काम करती है । जिस इन्सानी पोल (मानव देह) पर वह प्रगट होती है, ताकत, वह Manifested God in man (मानव देह में प्रगट परमात्मा) जो है, वह तुम्हारे सारे काम करता है ।

काया अंदर आपे वसे अलख न लखेया जाई ॥

वह अलख है, इंद्रियों के घाट से ऊपर है। जब तक जिस्म का रूप बने रहोगे उसको नहीं पा सकोगे।

मन मुगध बूझे नहीं बाहर भालण जाई॥

तो उस Bread of Life को पाने के लिये यह मानुष देह हमें मिली है। हम बड़े भाग्यशाली हैं। इस को पा कर हमें उसको (प्रभु को) पाना है। महापुरुष कई मिसालें देते हैं। कबीर साहब कहते हैं वह (प्रभु) कैसे है (इस शरीर में) -

ज्यों तिल में तेल है ज्यों चकमक में आग।

तिलों में तेल है, नज़र आता है कोई? पीस कर निकालो। चकमक में आग है। तो इसलिये कहते हैं -

तेरा प्रीतम तुझ में जाग सके तो जाग॥

मानुष जन्म हाथों से गुज़रा जा रहा है। ऐ इन्सान तू जाग। “जागो जागो सुत्तेयो।” Time and tide wait for no man. वक्त निकला जा रहा है। इस से फायदा उठाओ। समझे! मगर वह (प्रभु) है कहां?

ज्यों नैनन में पुतली खालिक है घट माहिं।

मूरख लोग जाने नहीं बाहर ढूँढण जाहि।

तो सारी बात कहां से शुरू हुई? कि यह कर्मों की खेती है। इसमें जब तक हम कर्म से नेहकर्म नहीं होते—कर्म योग में भी तब हम जन्म मरण से छुटेंगे जब Conscious Coworker of the Divine plan बन जायेंगे। “सो नेहकर्मी जो शब्द विचारे।” नेहकर्मी वही है जो शब्द का अनुभव करता है, नहीं तो बार-बार दुनिया में आना पड़ेगा। दूध है। दूध में लोग कहते हैं धी है। एक आदमी कहता है, मैं नहीं मानता भई। धी में तो पूरी तली जा सकती है, दूध में नहीं तली जा सकती। अब जिस ने धी बनता देखा है—दूध को थोड़ी जाग लगाकर दही बन जाए, दही को रिड़के, मक्खन बन जाए, मक्खन को गर्म करो तो धी बन जाए। जिसने देखा है, वह कहता है, हां दूध में धी है। अरे हमारी आत्मा में राम है। राम में आत्म बस रहा है। सिर्फ Self-analysis का (चेतन की जड़ से अलग करने का) मज़मून है। जब Rise above करोगे (पिंड से ऊपर आओगे) तुम देखोगे, I and my Father

are one (मैं और मेरा पिता एक है)। इस अनुभव को हम ने पाना है।

सब घट पूर्ण पूर रहिया आद पुरुष रब्बानी।

यह जो ज्योति है। कहां हम ढूँढ़ते हैं? बाहर ढूँढ़ते हैं ग्रंथों-पोथियों में, समाजों में, धर्म स्थानों में, गिरजों में, मस्जिदों में। असल हरि मंदिर यही है जिस में हम बस रहे हैं। इसमें (मानव देह में) वह (प्रभु) भी बस रहा है। इसके नमूने बाहर बनाए! गुँबदार शक्ल के जितने हैं सब मंदिर हैं। नाक की शक्ल के गिरजे हैं और माथे की मेहराब के नमूने की मस्जिदें हैं और आप को पता है मस्जिद में मुल्ला जो बांग देता है, यहां यह मेहराब है, माथे की शक्ल इसी की शक्ल को देख कर वह (मस्जिद की मेहराब) बनाई है। यहां ध्वनि आ रही है (अंतर में) कलामे-कदीम हो रहा है, नाद कहो, कलामे कदीम कहो, कलमा कहो।

हैफ़ दर बन्दे, जिस्म दरमानी ! निशनवी आं सौते पाके रहमानी ।

कि अफसोस तू दुनिया के बधन में बंध रहा है, उसकी पाक आवाज़ को जो अंतर में आ रही है उसको नहीं सुनता। अगर उस आवाज़ को पकड़ लो, कहाँ ले जाएगी? जहां से वह आ रही है। तो वह प्रभु की आवाज हम सब को बुला रही है, चल बच्चा! तू अपने घर वापस आ जा। शम्स तबरेज़ ने कहा -

हरदम निदा अज़ आयद वसूए जानोजस।

के ए शम्स तबरेजी दर बारगाहे किबरिया।

हर घड़ी एक आवाज़ मेरी रूह को प्रभु की इस जिस्म में आ रही है। क्या कहती है? ऐ शम्स तबरेज़, तू अपने घर आ जा। मानुष जन्म पा कर, यह जो मेहराब है ना, माथे की, इसके अंतर वह बांग (धुनि) आ रही है। जब तक तुम आँखों के नीचे बैठे हो, आना जाना बना रहेगा। आँखों के ऊपर जाओगे, उस कलाम के सुनने वाले बन जाओगे, उसके नूर को देखने वाले बन जाओगे। यह आत्मा की खुराक है। कब पाओगे? जब इन दरवाज़ों से ऊपर आओगे, जहां मर के रूह जाती है। वहां आंख खुलेगी, देखने वाले बन जाओगे, मानुष जन्म से पूरा फायदा उठा जाओगे। अब यह काम, बाहर से हटना, इंद्रियों के घाट से ऊपर आना, किसी समरथ पुरुष की कहानी है, जिस का रोज़ का काम है। एक तवज्जो से, दस, बीस, सौ, पांच सौ, हज़ार बैठे, सब की तवज्जो ऊपर आ जाती है। वह सुरतिवन्त है।

तो मैंने आज आपको जो बात पेश की कि मानुष जन्म हम को मिल चुका है बड़े भाग्यों से। हम बड़े भाग्यशाली हैं। यह हमारा वर्त्त है प्रभु को पाने का। क्यों आए इसमें, पिछले प्रारब्ध कर्मों से। अभी और नये बीज डाल रहे हैं (कर्मों के)। जैसे बीज डालोगे वैसे भोगोगे। पीछे जो डाले हैं वह अब भोग रहे हो। कुछ कर्म ऐसे हैं जो अभी फलीभूत होने हैं। किसी अनुभवी पुरुष के पास बैठो जो इन को wind-up कर दे (खत्म कर दे)। वह कैसे होता है? वह (महापुरुष) एक लकिर खैंचे देता है कि इसको उल्घन नहीं करो। सच बोलना धर्म है, ब्रह्मचर्य की रक्षा धर्म है। सबसे प्यार करना धर्म है। है सब में, तो सब से प्यार करना धर्म है। निष्काम सेवा करनी धर्म है। मगर “अहिंसा परमोधर्मः”। अहिंसा परम् धर्म है। यह अगली लाईन वह डाल देता है (यह करो यह न करो)। प्रारब्ध को वह (महापुरुष) छेड़ते नहीं, नहीं तो उसी वर्त मौत हो जाए। हाँ आत्मा को बलवान कर देते हैं, जिंदगी की रोटी देकर, जिससे दुनिया के दुख सुख आते हैं, मगर उनको असर नहीं होता। लेना है, लो भई। Angle of vision (दृष्टिकोण) बदल जाता है। संचित कर्म, चूंकि वह देखने वाला बन जाता है, करनहार नहीं रहता है, इसलिये वह सब जल जाते हैं।

तो मानुष जन्म हमको मिला है। आज के दिन दोबारा जन्म लो भई। यहाँ तक तो आपका जन्म आ गया। अब इससे ऊपर आ जाओ। वह दिन आपका मुबारिक होगा। तुम को मुबारिक मैं हजार बार दौँगा, जब आप पिंड से ऊपर या जाओगे। यह है असल जन्म, जिसको पा कर इन्सान को जन्म की खुशी मनानी चाहिये। जो जा रहे हैं (इस रस्ते) उनको मुबारिक। नहीं तो हमारा जन्म तभी हो ना, जब इससे ऊपर चले जाएँ। और महापुरुषों का जन्म दिन मनाना क्या है? कि वह जो तालीम देते हैं, पिंड से ऊपर जाने की, तुम उस तालीम के आमिल (अनुभवी) बन जाओ, तुम्हारी मुबारिक दी हुई हजार बार कबूल। जब तक यह भी नहीं, भई गाने-बजाने से तो काम नहीं होगा। बात को समझो। महापुरुषों ने यह तालीम हमेशा से दी। कोई नई तालीम नहीं, परम्परा से चली आ रही है। हम मोह-माया में भूलते रहते हैं। महापुरुष आ कर उसको फिर से ताज़ा करते रहते हैं। तो इस वर्त यही आप के सामने पेश किया गया। इसके अंतर बहुत कुछ है। कुछ कल सुबह, कुछ कल शाम, आपके सामने रखा जायेगा, जो मुझे इस उम्र तक थोड़ा बहुत, हजूर की कृपा से या प्रभु की कृपा से जो उनमें थी, मालूम हुआ, या Parallel study of Religions से, वह आपके सामने रखा जाएगा। इन चीजों को पल्ले बाँधो, इसको अमल में लाओ। ♦